विचार बिन्दु

आनंद वह ख़ुशी है जिसके भोगने पर पछताना नहीं पड़ता। –सुकरात

पुराने वृक्ष व काष्ठीय वनस्पति बिगड़े वनों के सुधार हेतु प्रारंभिक पूंजी है

एक बड़ी रोचक बात देखने को मिलती है कि बिगड़े वनों में जहां थोड़ी सी बची-खुची वनस्पति होती है या स्थानीय प्रजातियों के पुराने बड़े वृक्ष बचे रहते हैं उनके चारों तरफ वृक्षारोपण करने पर एक ओर रोपित और बुवाई किये गये पौधों की उत्तरजीविता बढ़ जाती है और दूसरी और ऐसी प्रजातियों के पौधे भी आने लगते हैं जिनका रोपण या बुवाई नहीं हुई। काष्ठीय प्रजाति के पौधों के इर्द-गिर्द प्राकृतिक पुनरुत्पादन में पाई जाने की इस प्रवृत्ति को रैमनैंट वेजिटेशन, रैमनैंट ट्रीज, फोकल ट्रीज, रैमनैंट फ्रेगमेंट्स, या नर्स प्लांट्स के कारण फैसिलिटेशन और न्यूक्लिएशन इफेक्टआदि के सन्दर्भ में देखा जाता है। ऐसी वनस्पति और वृक्षों को संरक्षित किया जाना चाहिये (देखें, आर. डब्ल्यू. ब्रुकर इत्यादि, जर्नल ऑफ़ इकोलॉजी, 96(1):18-34, 2008)। बड़े वृक्षों का संरक्षण इसलिये भी आवश्यक है क्योंकि क्षेत्र के सबसे बड़े एक प्रतिशत वृक्षों में 50 प्रतिशत बायोमास पाया जाता है (देखें, जे.ए. लुत्ज़ इत्यादि, ग्लोबल इकोलॉजी एंड बायोजियोग्राफी, 27(7): 849-864, 2018)। साथ ही, पारिस्थितिक तंत्र और मानव स्वास्थ्य को जोड़ने वाले अति-महत्वपूर्ण कारकोंके रूप में पुराने-वन और पुराने बड़े वृक्ष निर्विकल्प संसाधन व पृथ्वी पर जीवन के लिए आवश्यक पारिस्थितिक तंत्र हैं (देखें, मेलिंडा गिल्हेन-बेकर इत्यादि, एनवायर्नमेंटल केमिस्ट्री लेटर्स, 2022)।

यह विश्लेषण क्यों? भारत उन देशों में है जहाँ यूएन डिकेड ऑन इकोसिस्टम रेस्टोरेशन 2021-2030 के दौरान बड़ी मात्रा में वृक्षारोपण और वन पुनर्स्थापन प्रस्तावित हैं। ऐसी चिंतायें व्यक्त की गयी हैं कि भारत में वृक्षारोपण तकनीकी रूप से ठीक नहीं हो रहे हैं। इसलिये रणनीति व क्रियान्वयन को प्रमाण-आधारित रखना आवश्यक है। यह आलेख उष्णकटिबंधीय वनों के पुनर्स्थापन हेतु प्रमाण-आधारित रणनीतियों की पहचान के लिये किये जा रहे श्रंखलाबद्ध विश्लेषण का हिस्सा है। आज फैसिलिटेशन और न्यूक्लिएशन के माध्यम से बेहतर वन पुनर्स्थापन पर चर्चा है। ध्यान दीजिये, यहाँ हम ठूंठों या प्रसुप्त जड़ों के पुन:प्रस्फुटन (रिस्प्रोउटिंग, कॉपिसिंग) की बात नहीं कर रहे हैं। कॉपिसिंग एक अलग और महत्वपूर्ण विषय है जिस पर पृथक विश्लेषण होगा। इस आलेख पर भारतीय वन सेवा के वरिष्ठ अधिकारियों श्री पी.डी. गुप्ता, श्री राजीव त्यागी, श्री उमेश मोहन सहाय, श्री एस.एन. सिंह, श्री एम.एल. मीना, श्री अरविंदर सिंह बराड़ तथा श्री आर. पी. गुप्ता द्वारा समालोचनात्मक टिप्पणियों के लिये आभारी हूँ।

हाल ही में एक शोध में पाया गया कि 50 हेक्टेयर क्षेत्र में चन्दन के 5 रोपित वृक्षों में 10 से 15 वर्षों के अन्दर बीजोत्पादन प्रारम्भ हो गया है और अब प्राकृतिक पुनरुत्पादन रहा है। इस वन क्षेत्र में विविध उम्र वाले चन्दन के 178 पौधे पुनरुत्पादित हुये हैं जिनमें से 11 अब वृक्ष रूप में विकसित हो गये हैं व बीजोत्पादन कर रहे हैं। मदर-ट्रीज या मातृ-वृक्षों की उपस्थिति, बीज-विकीर्णन करने वाले पक्षियों की उपस्थिति, पक्षियों के लिये क्षेत्र में अन्यत्र बैठने के लिये स्थानीय प्रजातियों के वृक्षों की उपस्थिति, सुरक्षित जगह या सेफ-साइट्स में बीज विकीर्णन आदि इस प्राकृतिक पुनरुत्पादन में सहायक हैं। कई वृक्षों में पक्षियों के खाने योग्य फल होते हैं या उनमें चढ़ी गुडूची जैसी लताओं के फल खाने योग्य होते हैं और पक्षी वहां जाकर बैठते हैं तथा चन्दन वृक्ष से खाये गये बीजों को यहाँ विकीर्णित करते हैं। यह पाया गया कि कुमठा जैसे लेग्यूम प्रजाति के वृक्ष अपने वितान के नीचे अच्छा फर्टिलिटी आईलैंड बनाते हैं, इसलिये उन वृक्षों में बैठकर पक्षियों द्वारा बिखेरे गये बीजों से चन्दन का अच्छा प्राकृतिक पुनरुत्पादन प्रारंभ हो जाता है। ऐसे क्षेत्रों में चराई, कटाई व आग से कम से कम 10 वर्ष तक ठोस सुरक्षा करना आवश्यक होता है। ऐसे वृक्षों के नीचे विविध प्रजातियों की वनस्पति का पुंज या वेजीटेशन आइलैंड विकसित होता रहता है और न्यूक्लिेशन प्रभाव से वनस्पति धीरे-धीरे अपना दायरा बढ़ाने लगती है (डी.एन. पाण्डेय, प्रकाशनाधीन, 2022)। जहाँ ऐसे वृक्ष नहीं हैं वहां प्राणियों द्वारा विकीर्णित राजस्थान की तमाम प्रजातियों को सीधी बुवाई से पुनरुत्पादित किया जा सकता है। राजस्थान में डॉ. चन्द्र मोहन माथुर ने वर्ष 1961 में वन क्षेत्र में की गयी शोध में पाया था कि करौंदे की झाड़ियों के नीचे सीधी-बुवाई से चन्दन अच्छा उगता है (देखें, सी.एम. माथुर, इंडियन फ़ॉरेस्टर, 87(1): 37-39, 1961)।

वनों में मातृ-वृक्षों(मदर ट्रीज) की विविध प्रजातियों की उपस्थिति और वितरण के कारण फॉरेस्ट रेस्टोरेशन पर पड़ने वाले प्रभाव पर अभी तक का सबसे व्यापक वैश्विक अध्ययन स्पष्ट करता है कि पुनर्स्थापन क्षेत्रों के100 मीटर के भीतर मातृ-वृक्षों की उपस्थिति और निकटता के परिणामस्वरूप सीडलिंग्स या बिजौलों की संख्या औसतन तीन से चार गुना बढ़ी हुई पायी गयी। मातृ-वृक्षों की प्रचुरता यदि 25 मीटर के भीतर है तो पुनर्स्थापन में भारी धनात्मक प्रभाव पड़ता है (देखें, आर.ए. जहावी इत्यादि, इकोग्राफी 44(12): 1826-1837, 2021; एफ. सी. बेचारा इत्यादि, फारेस्ट इकोलॉजी एंड मैनेजमेंट, 491: 119088, 2021 भी देखें)। खास बात यह है कि यह पैटर्न बड़ी-बीज वाली प्रजातियों के कारण था जिनको पुनर्स्थापन में प्रमुखता देना सबसे कठिन किन्तु परम आवश्यक है। यदि प्राकृतिक प्रक्रिया के भरोसे रहा जाये तो उष्णकटिबंधीय वनों में किये जा रहे वृक्षारोपणों में बड़े-बीजों वाली प्रजातियाँ 25 से 30 साल देर से आती हैं और वन्यजीवों की कमी से इनका विकीर्णन व पुनरुत्पादन सीमित या समाप्त हो जाता है। भारत में हुये अध्ययन भी सिद्ध करते हैं कि बिगड़े वनों के पुर्स्थापन की सफलता उस क्षेत्र पर बड़े वृक्षों की संख्या पर भी निर्भर करती है (देखें, पी. देवीदर इत्यादि, करंट साइंस, 92(6): 805-811, 2007)।

बिगड़े वनों की बहाली हेतु जैव-विविधता में शुरुआती निवेश सर्वोच्च प्राथमिकता है। पहले से उग रहे काष्ठीय पौधे तथा प्राचीन बड़े वृक्षों को बचाने से वृक्षारोपण की बहु-क्रियात्मकता तेजी से बढ़ती है। इससे जैव-विविधता में सुधार, कार्बन संचय में बढ़ोत्तरी और लोगों की आजीविका में सुधार होना सुगम होता है।

बरगद कुल के वृक्ष उष्णकटिबंधीय पारिस्थितिक तंत्र के महत्वपूर्ण की-स्टोन घटक माने जाते हैं। इस कुल में बरगद, पीपल, गूलर, पाकर आदि राजस्थान में मिलते हैं। ये वृक्ष अनेक प्रजातियों के बीज विकीर्णक पक्षियों,चमगादड़ों आदि को आकृष्ट करते हैं क्योंकि बरगद कुल के फल पौष्टिक और कैल्शियम की बेहतर मात्रा वाले होते हैं। विकीर्णकों को आकृष्ट करने के कारण अन्य प्रजातियों की तुलना में फारेस्ट रेस्टोरेशन को बेहतर करने में अधिक प्रभावी होते हैं। भारत में हुये एक अध्ययन में 207 बिखरे हुये बरगद के वृक्षों के नीचे और आसपास उगने वाले पौधों के समुदायों का अध्ययन किया गया साथ ही समीप में अन्य प्रजाति के पेड़ों के लिये आंकड़े एकत्र किये गये। शोध में साफ़ हुआ कि अन्य प्रजाति के वृक्षों के आसपास पाई गयी 79 प्रजातियों की तुलना में बरगद के आस-पास अधिक पौध-प्रजातियां थीं जिनकी संख्या 140 थी। बरगद के आसपास पौधों का घनत्व भी दोगुना अधिक था (देखें, एच.ई.डब्ल्यू. कोटी-जोंस इत्यादि, बायोट्रोपिका, 48(3): 413-419, 2016)।

विविध प्रजातियों के बड़े वृक्ष, और विशेष रूप से बड़े बरगद के वृक्ष, वनों के पुनर्स्थापन को बढ़ाने में प्रभावी भूमिका निभाते हैं, इसलिये इनके संरक्षण को रोपण क्षेत्रों के आसपास प्राथमिकता दिया जाना चाहिये। जहाँ ये वृक्ष नहीं हैं वहां डंडारोपण (स्टेक प्लांटिंग) द्वारा शल्लकी (सालर), वनखड़ा, सेमल, पीपल, बरगद, पीपली (फाइकस एम्प्लीसीमा), गधा-पलाश, गूलर, गुग्गुलु, संदेशड़ा, सहजन आदि की 30 बड़ी वेजीटेटिव कटिंग प्रति हेक्टेयर, जिनमें कम से कम 4 बरगद कुल की कटिंग भी हों, ताकि प्रारंभ में रोपित डंडे बीज विकीर्णन करने वाले पक्षियों को उड़कर बैठने का स्थान दे सकें, और अपनी लम्बाई के कारण खर-पतवार को मात देकर आगे चलकर स्वयं वृक्ष का रूप लेकर क्षेत्र के पुनरुत्पादन में बेहतरी ला सकें। ध्यान यह देना है कि डंडारोपण के समय जमीन पर उल्टा नहीं गाड़ें और निचले हिस्से में एकाध चीरा मारकर थोर का दूध लगा दें तो जड़ें शीघ्रता से फूटती हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, इंस्टेंट ट्रीज: स्टेक प्लांटिंग इन अ नटशेल, 2017)।

प्राकृतिक वनों में नुकसान का स्तर, नुकसान में वनों की संरचना, विविधता एवं क्रियात्मकता को हुआ नुकसान, बीज उत्पन्न करने वाले विभिन्न प्रजातियों के प्राचीन बड़े वृक्षों की हानि, त्रिस्तरीय वानस्पतिक विविधता को हानि, मिट्टी का कटान, और थोड़ी-बहुत स्थानीय प्राकृतिक वनस्पति का आंकलन आवश्यक है। यदि बची-खुची वनस्पति या रेमनैंट वेजीटेशन है तो उसकी विविधता का आंकलन आवश्यक है। अगर किसी प्रजाति विशेष में रीजेनरेशन नहीं है और और बड़े वृक्षों का विदोहन हो गया है तो उस प्रजाति को पुनरुत्पादित कराने के लिये विशेष प्रयत्न करने होंगे। अगर पुनरुत्पादन रुक गया है तो एक्टिव रेस्टोरेशन की तमाम विधियों का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है। अगर सक्सेशन रुका नहीं है और क्षेत्र में प्रजाति विविधता का बहुत अधिक नुकसान नहीं हुआ है तथा समस्त स्थानीय प्रजातियों के बीज उत्पन्न करने वाले पौधे, झाड़ियां और वृक्ष उपलब्ध हैं, तो चराई, कटाई और आग से सुरक्षा ही अपने आप में पर्याप्त हो जाती है और प्राकृतिक पुनरुत्पादन को बढ़ावा देने (असिस्टेड नेचुरल रीजेनरेशन) की विधियां काम कर सकती हैं। ध्यान यह रखना है कि अंतत: जैव-विविधता प्राकृतिक वनों की तरह हो जाये, कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन की दर प्राकृतिक वनों के बराबर हो जाये, और लोगों को मिलने वाले आजीविका से संबंधित लाभ भी प्राकृतिक वनों के स्तर तक पहुंच जायें। ऐसा तभी संभव है जब पूर्ण रूप से क्रियात्मक पारिस्थितिक तंत्र की संरचना खड़ी हो जाये। कुल मिलाकर पारिस्थितिक, आर्थिक एवं सामाजिक तंत्र में प्रकृति-आधारित समाधान क्रियान्वयन करना आवश्यक हो जाता है (देखें, डी.एन. पाण्डेय, करंट साइंस, 83(5): 93-602, 2002)।

सबसे महत्वपूर्ण कारक यह है कि जिन कारणों से वह वन नष्ट हुये हैं उन कारणों को समाप्त करना आवश्यक है। इसमें चराई, कटाई, आग इत्यादि शामिल हैं। यह एक वैश्विक वास्तविकता है कि वर्ष 1930 से लेकर और वर्ष 1980 के बीच उष्णकटिबंधीय वनों का वह क्षेत्र बिल्कुल निर्वनीकृत कर दिया गया जो उपजाऊ समतल भूमि में था और जिनमें बहुत बड़े-बड़े वृक्षों वाले वन उपलब्ध थे। असल में वन-विनाश का सबसे बड़ा कारण यह था कि उष्णकटिबंध में वर्ष 1980 से 2000 के बीच 55 प्रतिशत से अधिक खेती की नई भूमि अक्षुण्ण वनों व 28 प्रतिशत खेती की भूमि बिगड़े वनों से आई। (देखें, एच.के. गिब्ब्स इत्यादि, प्रोसीडिंग्स ऑफ़ द नेशनल अकैडमी ऑफ़ साइंसेज यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका, 107 (38) 16732-16737, 2010)। इन सभी कारकों को आप बायोटिक फैक्टर्स कह सकते हैं।

इन सबके अतिरक्त क्षेत्र में एबायोटिक फैक्टर्स भी महत्वपूर्ण होते हैं। अब प्राय: पोषक तत्वों की कमी वाली मिट्टी व पहाड़ी क्षेत्रों में ही वन उपलब्ध हैं। यह स्थिति केवल भारत की नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व की है। कठिन पहाड़ी पथरीले क्षेत्रों में प्राकृतिक पुनरुत्पादन को बढ़ावा देना एक बहुत बड़ी चुनौती है। उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों में मिट्टी के पोषक तत्वों की कमी और पानी की कमी दोनों इतने महत्वपूर्ण कारक हैं कि इनका उचित प्रबंध नहीं होने पर वृक्षारोपण में सफलता का प्रतिशत बहुत कम हो जाता है। भारत में जल एवं मृदा संरक्षण की विभिन्न विधियां क्रियान्वित की जाती हैं और उनके अच्छे प्रभाव दिखाई पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में फैसिलिटेशन का लाभ लेकर वृक्षारोपण क्षेत्रों में प्राकृतिक पुनरुत्पादन में बढ़ावा देना आवश्यक हो जाता है। थूर की झाड़ियों के मध्य पक्षियों द्वारा विकीर्णित वृक्ष प्रजातियों के बीजों का उगना या विकीर्णन में कमी होने पर बीजों की सीधी बुवाई के माध्यम उगाना राजस्थान में फैसिलिटेशन का सबसे आसानी से दृष्टिगोचर होने वाला एक उदाहरण है।

भारत में उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों के पुनर्स्थापन हेतु जो मॉडल्स बनाये गये हैं उनमें इन सब बातों का ध्यान रखा गया है। समस्या मॉडल्स की नहीं, बल्कि क्रियान्वयन, मूल्यांकन और प्रबोधन की है। वृक्षारोपण में जैव-विविधता बढ़ाना आवश्यक है, अन्यथा मात्र दो-चार प्रजातियों का रोपण करने से भविष्य में आने वाली वन संरचना, जैव-विविधता, कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन और स्थानीय लोगों की आजीविका को सुदृढ़ कर पाने के लिए समर्थ नहीं रहेगी। बड़ी-बीज वाली प्रजातियों का विकीर्णन वन्य-प्राणियों पर निर्भर होने के कारण प्राय: सीमित होता है। जहाँ से वन्य-प्राणियों की प्रजातियाँ समाप्त हो गयी हैं वहां पुनर्स्थापन हेतु बड़े बीजों वाली प्रजातियों की सीधी-बुवाई और पौधारोपण भी आवश्यक है (देखें, डी.एन.पाण्डेय, करंट साइंस, 83(7):792-793, 2002; ए. डि सैको इत्यादि, ग्लोबल चेंज बायोलॉजी, 27: 1328-1348, 2021; एम. इलिआस इत्यादि, रेस्टोरेशन इकोलॉजी, ई.13574, 2021 भी देखें)।

इस विश्लेषण में पाये गये तथ्यों का कुल मिलाकर निचोड़ यह है कि बिगड़े वनों की बहाली हेतु जैव-विविधता में शुरुआती निवेश सर्वोच्च प्राथमिकता है। पहले से उग रहे काष्ठीय पौधे तथा प्राचीन बड़े वृक्षों को बचाने से वृक्षारोपण की बहु-क्रियात्मकता तेजी से बढ़ती है। इससे जैव-विविधता में सुधार, कार्बन संचय में बढ़ोत्तरी और लोगों की आजीविका में सुधार होना सुगम होता है। इन निष्कर्षों का प्रायोगिक तात्पर्य क्या है? उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों में अंकुरण और छोटे पौधों की बढ़त नमी की कमी से दुष्प्रभावित होती है। बची-खुची वनस्पति के कारण छाया वाले स्थान बिजौलों के लिये सुरक्षित स्थल बन जाते हैं क्योंकि यहाँ नमी बची रहती है। पूर्व से उपलब्ध काष्ठीय वनस्पति का आवरण सभी प्रकार के उष्णकटिबंधीय वनों की प्रजातियों के लिये बीज-अंकुरण को बढ़ाता है, लेकिन उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों, जहाँ पानी की उपलब्धता मानसून के कुछ महीनों तक ही रहती है, में अंकुरण और बिजौलों की शुरुआती बढ़त के लिये पुराने वृक्षों और काष्ठीय वनस्पति का आवरण अति महत्वपूर्ण संसाधन है। वृक्षारोपण करते समय समठाता में वन पुनर्स्थापन की सभी रणनीतियों का क्रियान्वयन एक साथ करना चाहिये और इसमें बड़े वृक्षों और काष्ठीय वनस्पति का संरक्षण और संवर्धन अवश्य करना चाहिये।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

वित्तीय बजट से सदैव दूरगामी आशाएँ ही रखनी चाहिए

मोदी सरकार द्वारा आगामी वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए एक फरवरी को मुल्क की संसद में पेश किया बजट अब विश्लेषण के दौर से गुजर रहा है। हर प्रतिक्रिया का आधार मुल्क का विकास तथा व्यक्तिगत आर्थिक आशाएं है। इसलिए बजट को नापसंद करने वालों की प्रतिक्रिया भी सही है तथा इसे सही बताने वालों की प्रतिक्रिया भी गलत नहीं लगती है। लगभग हर एक आमजन बजट चर्च में सम्मिलित दिखाई दे रहा है। इसी परिपेक्ष्य में अगर 15 या 20 वर्ष पूर्व की तुलना में अब आमजन अपनी विश्लेषणात्मक राय बड़े ही रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत कर रहा है। यकीनन इस संबंध में मीडिया व सोशल मीडिया की शक्ति भी निहित दिखती प्रतीत होती है।

वित्तीय बजट से एक दिन पूर्व प्रस्तुत आर्थिक सर्वे के अंतर्गत अगले वित्तीय वर्ष के लिए 8 से 8.5 प्रतिशत की विकास दर को सोचा गया है। इसलिए बजट से एक दिन पूर्व ही यह प्रतीत होने लग गया था कि बजट में आर्थिक नीतियों का फोकस दूरगामी विकास पर ही होगा तथा इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट मुख्य प्राथमिकता में रहेगा और अगले दिन वास्तव में यह सब ही देखने को मिला। विश्लेषणात्मक आधार पर यह कहना जायज होगा कि 8 से 8.5 प्रतिशत की विकास की दर वाली भारत की अर्थव्यवस्था को एक दूरगामी सोच ही रखनी होगी। एक नया पक्ष यह देखने को मिला कि सरकार ने इस बार आर्थिक विकास की बागडोर इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ टेक्नोलॉजी क्षेत्र को भी दी है।

इसी सोच को लेकर चलते हुए सरकार ने अपनी पूंजीगत खर्चे को 35.4 प्रतिशत से बढ़ाया है तथा 7.5 लाख करोड़ रुपए का आवंटन विभिन्न योजनाओं के लिए किया है। पूंजीगत खर्चों का इतना बड़ा आवंटन भविष्य के प्रति उत्साहजनक सोच को दिखाता है। इन सब का अंतिम परिणाम एक आम आदमी को ही मिलेगा । इस खर्चे के माध्यम से जहां एक तरफ छोटे शहरों में 80 लाख नए मकान बनेंगे तो वहीं दूसरी तरफ पब्लिक ट्रांसपोर्ट भी आएगा। 20000 किलोमीटर के राष्ट्रीय राजमार्ग भी बनेंगे जो तीव्र आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है । 400 नई रेलों से रेलवे का भी विकास किया जाएगा।

पूंजीगत खर्चों का एक बहुत बड़ा भाग डिजिटलाईजेशन के लिए टेक्नोलॉजी के विकास पर भी उपयोग होने वाला है जिसमें गाँवों में इंटरनेट की अच्छी स्पीड देने के लिए पीपीपी के माध्यम से फाइबर ऑप्टिकल लगाना एक बहुत ही अच्छी सोच का प्रतीक है। इसके माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में तेजी आएगी तथा कृषि क्षेत्र में भी इसका एक सकारात्मक पक्ष देखने को मिलेगा। मुल्क में इसी वर्ष इंटरनेट के लिए 5जी स्पेक्ट्रम की नीलामी व आवंटन भी होगा। इसके माध्यम से सर्विस सेक्टर में एक नई तेजी देखने को मिलेगी। टेक्नोलॉजी के विकास के माध्यम से सरकार ने बैंकिंग क्षेत्र में भी आमूलचूल परिवर्तन को प्राथमिकता में रखा है तथा इसमें मुख्य फोकस ग्रामीण अर्थव्यवस्था का व्यक्ति है। इस सोच के अंतर्गत सरकार ने 1,50,000 पोस्ट ऑफिस को बैंक में परिवर्तित करने का आधार बनाया है तो वहीं पर 75 नए डिजिटल बैंकों की घोषणा भी एक नई सोच को इंगित करती है। इस सुविधा के माध्यम से एक ग्रामीण व्यक्ति को विभिन्न प्रकार के आर्थिक फायदे डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से मिलेंगे।

डॉ पी एस वोहरा

इसके अलावा बजट में सरकार का कोई और फोकस आमूलचूल परिवर्तन करने के उद्देश्य से नहीं दिखा है। सबसे बड़ी निराशा बेरोजगारी के पक्ष पर देखने को मिली। जनवरी माह तक चालू वित्तीय वर्ष में बेरोजगारी की औसतन दर 8 प्रतिशत से अधिक रही है। 7 राज्यों में तो यह 10 प्रतिशत से अधिक रही। विभिन्न रिपोर्टों के आंकड़े यह लगातार बता रहे हैं कि आर्थिक विषमता समाज में बहुत तेजी से बढ़ रही है तथा इसका मुख्य कारण बेरोजगारी ही है। यह ठीक है कि पूंजीगत खर्चों की बढ़ोतरी का अंतिम परिणाम समाज में विभिन्न तरह के रोजगार सुविधाओं की उपलब्धता होगा पर यह सब भविष्य के गर्त में है। वर्तमान में तो मात्र आर्थिक संघर्ष ही है।

बजट में वर्तमान प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कर प्रणाली में परिवत्रन नहीं कर शायद सरकार की यह सोच रही होगी कि द्वितीय लहर के बाद अर्थव्यवस्था में जो तेजी आई वो एक आम आदमी के जीवन में भी आई होगी। वास्तविकता में स्थिति बिल्कुल विपरीत है। लगातार बढ़ रही महंगाई इसका एक सबसे बड़ा विकट कारण है।

आम आदमी जो कि इस मुल्क की 70 प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व करता है, वह जीएसटी की 5, 12, 18 प्रतिशत के स्लैब में भी कुछ कमी चाहता था ताकि दिन-प्रतिदिन की गुजर-बसर की चीजें व खाद्य पदार्थ कुछ सस्ते हों पर वह सब भी नहीं हुआ। हां, सरकार ने डिजिटल करेंसी इन्वेस्टमेंट पर 30 प्रतिशत का टैक्स लगाकर भ्रष्टाचार पर अपनी पकड़ को मजबूत बनाने का प्रयास किया है पर शायद सरकार यह भूल गई कि आम आदमी को यह पता ही नहीं है कि क्रिप्टो करेंसी भी कोई चीज है । और उसमें निवेश तो बहुत दूर का ख्याल है। आयकर के संठाहण को बढ़ाना सरकार का एक उद्देश्य दिखा है इसीलिए शायद करदाता को 2 वर्षों तक टैक्स से चूक गई आय की घोषणा को दिखाने की सुविधा दी गई है। दिव्यांगों को आयकर में सुविधा निश्चित रूप से एक बहुत बड़ा सकारात्मक पक्ष है। वहीं पर आयकर निवेश की सीमा में मात्र 4 प्रतिशत की बढ़ोतरी का परिवर्तन न्यू पेंशन स्कीम में किया गया है।

निराशा कृषि क्षेत्र को लेकर भी रही है। बजट से पूर्व प्रस्तुत आर्थिक सर्वेक्षण में चालू वित्तीय वर्ष के लिए कृषि क्षेत्र की विकास दर 4 प्रतिशत से कम रही है इसके बावजूद बजट में इस क्षेत्र के लिए कुछ बहुत उत्साहजनक नहीं पाया गया है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा जनसंख्या का 50 प्रतिशत से अधिक भाग कृषि पर ही निर्भर है इसलिए इस क्षेत्र के लिए आमूलचूल परिवर्तन ना होना निराश कर रहा है। एमएसपी के लिए 2.37 लाख करोड रुपए की रकम का आवंटन किया गया है जो काफी बढ़िया निर्णय है परंतु एमएसपी को कानूनी जामा पहनाने की कोशिश नहीं की गई है। वहीं पर कृषि क्षेत्र में बढ़ रही लगातार लागत को नियंत्रण करने हेतु जीएसटी की दरों में बदलाव नहीं किया गया है, जो एक किसान के लिए फिर से परेशानी है।

चिकित्सा सुविधाओं पर हमारे मुल्क में पिछले वित्तीय वर्ष तक जीडीपी का 2 प्रतिशत से कम खर्च होता था । धरातल पर हकीकत यह भी है कि गाँवों व छोटे शहरों में सरकारी क्षेत्रों की चिकित्सा सुविधा का बहुत बुरा हाल है। आम आदमी की यह एक सर्वमान्य सोच है कि अच्छी चिकित्सा सुविधा महंगी है। इस बजट से चिकित्सा में रिसर्च एंड डवलपमेंट को बढ़ाया जाएगा तथा आम व्यक्ति को चिकित्सा की मूलभूत सुविधाएं अच्छे स्तर पर प्राप्त होंगी, यह सबकी आशा थी।

अंतिम पक्ष निराशा का यह भी रहा है कि पेट्रोल, डीजल व रसोई गैस को उत्पाद शुल्क व वेट से हटाकर जीएसटी के दायरे में नहीं लाया गया है जिस कारण आम व्यक्ति की यह सोच बरकरार है कि इनके मूल्यों में लगातार बढ़ोतरी होती रहेगी ।

फिर भी प्रत्येक व्यक्ति को एक सकारात्मक सोच रखनी चाहिए कि आर्थिक नीतियां मुल्क के विकास के लिए ही बनती है तथा मुल्क के विकास का भागीदार वो खुद भी है। बजट अगर दूरगामी सोच रखता है तो निश्चित रूप से हमारी आने वाली पीढ़ियां तो आर्थिक रूप से सुरक्षित रहेंगी तथा उनके जीवन में संघर्ष कम रहेगा।

डॉ पी एस वोहरा
आर्थिक मामलों के जानकार

मां की सीख काम आई, एक बीघा में बेर की खेती कर कमाए 1.5 लाख रूपये

ऑस्ट्रेलियन, कश्मीरी एप्पल बेर के 400 पेड़ मंगवाए और जमीन में लगाए

थानागाजी, (निसं)। थानागाजी कस्बे के समीपवर्ती ग्राम पंचायत द्वारापूर के रहने वाले राकेश कुमार की पुश्तैनी जमीन द्वारापूर ग्राम के बीचों-बीच स्थित है जो सिंचित जल के अभाव में बेकार पड़ी थी। खेती बाड़ी की जमीन की यह दुर्दशा देख कर इनकी मां कोयली देवी को बड़ी पीड़ा होती थी। मां का मन हमेशा जमीन से फसल पैदा करने का रहता था लेकिन पानी के अभाव में सब कुछ बेकार था । दो बार बोरवेल भी खुदवाया जिनमें पानी सिंचाई के लिए पर्याप्त मात्रा में नहीं मिला।

- **लोकल मंडी सहित आस-पास के खुदरा विक्रेताओं को बेचा प्रोडेक्ट**
- **आर्गेनिक कृषि कर एक बीघा जमीन से पहले बरस कमाये 1.5 लाख रुपए**

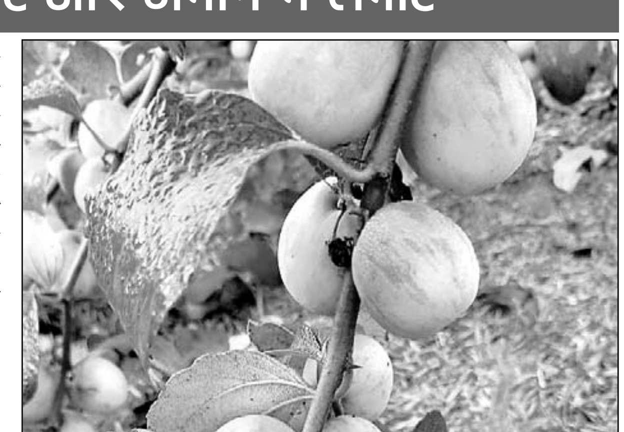

थानागाजी की पंचायत द्वारापूर में राकेश ने उगाई बेर की फसल।

इसके बाद राकेश ने थानागाजी कृषि पर्यवेक्षक राजेंद्र सिंह बैंस से संपर्क किया एवं कम पानी में पैदा होने वाली फसलों के बारे में जानकारी ली । राजेंद्र सिंह ने जमीन की उर्वरकता एवं पानी की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए बेर की खेती करने का सुझाव दिया। जिस पर इन्होंने कोलकाता स्टेट नर्सरी से संपर्क किया एवं वहां से ऑस्ट्रेलियन, कश्मीरी एप्पल बेर के 400 पेड़ मंगवाए और जमीन में लगाए तथा खाद और उर्वरक के नाम पर घर के पालतू पशुओं के गोबर खाद से वर्मी कंपोस्ट, और जीवामृत तैयार कर पौधों में दिया एवं सिंचाई के लिए ड्रिप इरीगेशन तकनीक काम में ली। जिसका परिणाम यह रहा की पहले साल में बेर का उत्पादन औसत से अधिक रहा। जिसको यहां की लोकल मंडी सहित आस-पास के खुदरा विक्रेताओं को बेचना शुरू किया एवं साथ ही अन्य लोगों को एप्पल बेर के पौधे बंजर भूमि में लगवाये। एवं खुद की नर्सरी विकसित की।

जिससे इन्हें पहले साल में लगभग डेढ़ लाख रुपए का मुनाफा मिला।अब खेत में बेर की अच्छी पैदावार होने से वृद्ध मां सुबह से शाम पेड़ों की देखरेख में लगी रहती है। अब स्वयं राकेश अन्य किसानों को भी इस तरह की कम पानी वाली जैविक खेती के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के जूनियर वर्ग में बीकानेर संभाग का प्रतिनिधित्व करेंगी छात्रा चेतना नाई

छात्रा अपने प्रोजेक्ट 'छत पर कृषि' को प्रस्तुत करेगी

प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय स्तर पर चयनित होने पर विद्यालय परिवार द्वारा मार्गदर्शक शिक्षक विमलेश चन्द्र, बाल वैज्ञानिक चेतना नाई एवं प्रेरणा शर्मा का विद्यालय स्टाफ ने अभिनन्दन किया।

सादुलपुर, (निसं)। राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय राजगढ (चूरू) की कक्षा 10वीं की छात्रा एवं बाल वैज्ञानिक चेतना नाई एवं प्रेरणा शर्मा मार्गदर्शक शिक्षिक विमलेश चन्द्र के निर्देशन में 29वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में जूनियर वर्ग में बीकानेर संभाग का राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करेंगी।

प्रधानाचार्य डॉ. सुमन जाखड़ ने बताया कि बाल वैज्ञानिक चेतना नाई एवं प्रेरणा शर्मा ने चूरू जिले का ही नहीं बल्कि बीकानेर संभाग का राष्ट्रीय स्तर पर परचम लहराया है। दोनों ही छात्राएं मार्गदर्शक शिक्षक विमलेश चन्द्र के मार्गदर्शन में 15 फरवरी को वर्चूअल मोड पर होने वाली 29वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में अपने प्रोजेक्ट 'छत पर कृषि' को प्रस्तुत करेंगी। जयपुर से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा शनिवार को इस प्रोजेक्ट को राष्ट्रीय स्तर के लिए चुना गया। यह प्रोजेक्ट एक सामाजिक नवाचार है जो वर्तमान समय में बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय स्तर पर चयनित होने पर विद्यालय परिवार द्वारा मार्गदर्शक शिक्षक विमलेश चन्द्र, बाल वैज्ञानिक चेतना नाई एवं प्रेरणा शर्मा का अभिनन्दन किया गया एवं मुंह मीठा करवाया गया तथा अग्रीम शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर स्टाफ सचिव शमशेर खान, सुमित्रा चौधरी, अनिता चौधरी, ईश्वरसिंह, सुमेर सिंह, नवाब खान, द्रोपदी, शंकुन्तला राधा, महेश व ओमप्रकाश आदि उपस्थित थे।

राशिफल रविवार 6 फरवरी, 2022

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2078, रेवती नक्षत्र सांय 5:10 तक, साध्य योग सांय 4:51 तक, कौलव करण सांय 4:12 तक, चन्द्रमा सांय 5:10 पर मेष राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मीन, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सांय 5:10 से सूर्योदय तक है। रवियोग दिन 1:24 तक है और सांय 5:10 से पुन: आरम्भ होगा। पंचक सांय 5:10 तक रहेंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:36 से 9:57 तक, लाभ-अमृत 9:57 से 12:00 तक, शुभ 2:03 से 3:24 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:14, सूर्यास्त 6:08

मेष
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी और सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

मिथुन
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

कर्क
परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

सिंह
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा।

कन्या
परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बनने लगेंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

तुला
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

वृश्चिक
महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। आवश्यक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। सुख-सुविधाओं में कमी आयेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

मकर
आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मित्रों/रिश्तेदारों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव दूर होगा। महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। शुभ-मांगलिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।